डायरी के पन्ने

1. ऐन कैसे लोगों की भर्त्सना करती है ?
ऐन ऐसे लोगों की भर्त्सना करती है जो महिलाओं विशेषकर सुंदर महिलाओं के योगदान को नहीं मानते। उनकी नजरों में महिलाएँ अपनी सुंदरता की बलि चढ़ाकर भी बच्चों को जन्म देने के कारण महान हैं।

2. यह साठ लाख लोगों की तरफ से बोलने वाली एक आवाज है। एक ऐसी आवाज, जो किसी संत या कवि की नहीं, बल्कि एक साधारण लड़की की है।" इल्या इहरनबुर्ग की इस टिप्पणी के संदर्भ में ऐन फैंक की डायरी के पठित अंशों पर विचार करें।
ऐन फैंक की डायरी में उसका व्यक्तिगत जीवन ही नहीं अपितु साठ लाख यहूदियों पर ढाए गए जुल्मों की भी जीवंत कहानी है। यह लड़की न संत है न कवि, अपितु भूमिगत परिवार की एक सदस्य है जिसमें असाधारणता के कोई लक्षण नहीं है। इसके बाद भी उसने यहूदियों के प्रति होने वाले अन्याय को कलमबद्ध किया।
दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान हिटलर ने यहूदियों को जिस तरह यातनाएँ देकर भूमिगत जीवन जीने के लिए मजबूर किया था, उसका चित्रण लेखिका की कलम से हुआ है। युद्ध की भयावहता से लोग कांप उठते थे। अतः यह कहना उचित है कि कहानी एक परिवार की नहीं, अपितु साठ लाख लोगों की पीड़ा है।

3. ऐन महिलाओं को किस कारण सम्माननीय मानती है?
ऐन महिलाओं को प्रसव-पीड़ा सहने के कारण सम्माननीय मानती है। उसका मानना है कि एक औरत एक शिशु को जन्म देते समय जितनी पीड़ा झेलती है, उतनी पीड़ा युद्ध में लड़ने वाले सिपाही मिलकर भी नहीं झेलते।

4. "काश, कोई तो होता जो मेरी भावनाओं को गंभीरता से समझ पाता। अफसोस, ऐसा व्यक्ति मुझे अब तक नहीं मिला...।" क्या आपको लगता है कि ऐन के इस कथन में उसके डायरी लेखन का कारण छिपा है?
यह सार्वभौमिक सत्य है कि लेखक आत्माभिव्यक्ति के लिए लिखता है।
ऐन फ्रैंक आठ सदस्यों के समूह में सबसे छोटी उम्र की है। मिसेज वानदान और मिस्टर डसेल प्राय: उसके विषय में नुक्ताचीनी करते रहते हैं। उसकी मम्मी भी उसके लिए उपदेशिका बनकर ही रही है। इन सात सदस्यों में से पीटर से उसकी पटरी बैठती है किंतु पीटर से संवाद करना ऐन को सरल नहीं लगता। भूमिगत आवास में बंद एक किशोरी क्या करे। वह अपनी भावनाएँ किससे कहे? उसकी भावनाओं को गंभीरता से समझने वाला व्यक्ति कोई नहीं है, अत: वह अपने उद्‌गारों को डायरी के माध्यम से प्रकट करती है।

5. हॉलैंड के प्रतिरोधी दल भूमिगत लोगों की किस प्रकार सहायता कर रहे थे?
दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान जहाँ जर्मन अत्याचार कर रहे थे, वहीं कुछ प्रतिरोधी दल पीड़ित लोगों की जी-जान से सहायता कर रहे थे। 'फ्री नीदरलैंड्स' ऐसा ही दल था जो पीड़ितों के लिए नकली पहचान-पत्र बनाता था, उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करता था, युवा ईसाईयों के लिए काम की तलाश करता था। वे लोग पुरुषों से कारोबार तथा राजनीति की बातें करते थे। महिलाओं के साथ भोजन तथा युद्ध के समय के कष्टों की बातें करते थे।

6. प्रकृति-प्रदत्त प्रजनन-शक्ति के उपयोग का अधिकार बच्चे पैदा करें या न करें अथवा कितने बच्चे पैदा करें- इस की स्वतंत्रता स्त्री से छीनकर हमारी विश्व व्यवस्था ने न सिर्फ स्त्री को व्यक्तित्व विकास के अनेक अवसरों से वंचित किया है बल्कि जनाधिक्य की समस्या भी पैदा की है।" ऐन की डायरी 13 जून 1944

ऐन यह मानती है कि पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता के कारण नारियों पर शासन करते हैं। वह यह मानती है कि नारियों को उचित सम्मान नहीं मिल रहा है। नारी बच्चे को जन्म देने के समय जो पीड़ा व कष्ट सहती है, वह युद्ध में लड़ने वाले सैनिक से कम नहीं है। औरतों ने अपनी बेवकूफी के कारण कष्ट, उपेक्षा व असम्मान को सहन किया है। औरतों को इनके हिस्से का सम्मान मिलना चाहिए।

ऐन का कहना है कि औरतों को बच्चे पैदा करना बंद तो नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रकृति चाहती है कि औरत यह कार्य करती रहे। वह यह भी मानती है कि आनेवाली शताब्दी में औरतों के लिए बच्चे पैदा करना अनिवार्य कार्य नहीं रहेगा।

आज भारत जैसे राष्ट्र में भी औरतों की स्थिति में जबरदस्त बदलाव आया है।

7. किस घटना के कारण ऐन को लगा कि उसकी पूरी दुनिया उलट-पुलट गई है और क्यों?

8 जुलाई 1942 को ऐन फ्रैंक के घर में संदेश आया कि उसकी बहन मार्गोट को ए.एस.एस से बुलावा आया है। इस बुलावे का अर्थ था - यातना शिविर में बुलाया जाना और उसे जर्मन सेना के रहमो-करम पर छोड़ देना। इसके लिए ऐन के माता-पिता बिल्कुल तैयार नहीं थे। उन्होंने तुरंत ही भूमिगत होने का मन बना लिया। इस प्रकार ऐन की अच्छी भली दुनिया यकायक उलट हो गई।

8. "ऐन की डायरी अगर एक ऐतिहासिक दौर का जीवंत दस्तावेज है तो साथ ही उसके निजी सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल का भी। इन पृष्ठों में दोनों का फर्क मिट गया है।" इस कथन पर विचार करते हुए, अपनी सहमति या असहमति तर्कपूर्वक व्यक्त करें।

पुथल का वर्णन करती है। द्वितीय विश्वयुद्ध का भयावह समय है। जर्मनी ने हॉलैंड पर अधिकार कर लिया है ब्रिटेन हॉलैंड को मुक्त कराने के लिए प्रयत्नशील है। यहूदियों पर भयंकर अत्याचार हो रहे हैं। जब ऐन फ्रैंक अपने निजी जीवन के सुख-दुख और भावनात्मक उथल-पुथल का वर्णन करती है तो साथ ही ऐतिहासिक घटनाएँ भी आ जाती हैं -

- आवास में जर्मनों के भय से दिन-रात अंधकार रखना।
- युद्ध के अवसर पर राशन-बिजली का अभाव
- टर्की की तटस्थता की घोषणा
- ब्रिटेन का हॉलैंड को मुक्त कराने का प्रयास।
- हिटलर का सैनिकों से साक्षात्कार

9. लेखिका और पीटर के आपसी संबंधों पर प्रकाश डालिए।
लेखिका और पीटर नवयुवा थे। दोनों में आपसी आकर्षण था। पीटर स्वभाव से बहुत शांतिप्रिय, सहनशील और सहज आत्मीय युवक था। उसके मन में ऐन के प्रति अगाध स्नेह था

10. ऐन ने अपनी डायरी 'किट्टी' (एक निर्जीव गुड़िया) को संबोधित चिट्ठी की शक्ल में लिखने की जरूरत क्यों महसूस की होगी?
अज्ञातवास में आठ सदस्य रह रहे थे, ऐन सबसे कम उम्र की किशोरी है, उसकी आयु ऐसी है जब भावनाओं का वेग बहुत अधिक होता है। उसे किसी के साथ बात करने की इच्छा होती होगी। इन सदस्यों में से कोई भी उसकी भावनाओं को समझने वाला नहीं है।

इन आठ सदस्यों की बातचीत के विषय ऐसे होते हैं जिनको वह हजारों बार सुन चुकी है। मिस्टर डसेल और मिसेज वानदान उस पर तरह-तरह के आरोप लगाते हैं। उसकी मम्मी उपदेश की घुट्टी पिलाती हैं। ऐसे में ऐन क्या करे? विवश होकर वह अपनी गुड़िया किट्टी से ही बात करती है। उसकी यह बातचीत ही डायरी के पन्ने बन गए हैं।

11. डायरी के पन्ने पढ़कर आपके मन में क्या प्रतिक्रिया होती है?
डायरी के पन्ने ऐन फ्रैंक द्वारा रचित है। इसमें दूसरे विश्व-युद्ध के दौरान जर्मनी द्वारा यहूदियों पर किए गए अत्याचारों का भोगा हुआ वर्णन है हिटलर के क्रूर आदेशों के कारण यहूदियों को किस प्रकार आतंकित किया गया, कुचला गया और लाखों नागरिकों को यातनाएं देकर मार डाला गया- यह दिखाना इस डायरी का उद्देश्य है।

12. युद्ध काल में सेंधमारों के दुस्साहस के बारे में ऐन क्या लिखती है।
युद्धकाल में सेंधमारों के कारण जन जीवन कितना भयमय हो गया था, उसके विषय में ऐन लिखती है डॉक्टर अपने मरीजों को नहीं देख पाते, क्योंकि उन्होंने पीठ मोड़ी नहीं कि उनकी कारें और मोटर साइकिलें चुरा ली जाती है, चोरी चकारी इतनी बढ़ गई है कि उच्च लोगों में अँगूठी पहनने का रिवाज तक नहीं रह गया है।
सेंधमारों में इतना दुस्साहस है कि मालिक के जागने पर भाग जाते हैं किंतु तनिक रुके ही पुनः आ जाते हैं।

13. अपने ऊपर मिसेज वान दान द्वारा लगाए आरोपों के विषय में ऐन उनका क्या मूल्यांकन करती है।
ऐन पर हमेशा आरोपों की बौछार करते रहने वाले दो लोग हैं- मिसेज वान दान और डसेल। उनके बारे में सबको पता है कि वे किसने जड़बुद्धि हैं मूरख जिसके आगे कोई विशेषण लगाने की जरूरत नहीं मूर्ख लोग आमतौर पर इस बात को सहन नहीं कर पाते कि कोई उनसे बेहतर काम करके दिखाए और इसका सबसे बढ़िया उदाहरण ये दो जड़मति मिसेज वान दान और मूर्खाधिराज डसेल है।

अपने मददगारों के विषय में लिखते समय ऐन कहती है कि ये लोग जान जोखिम में डालकर दूसरों के लिए काम करते हैं। ऐन को आशा है कि हमारे मददगार हमें सुरक्षित किनारे तक ले जाएँगे। वे रोज आते हैं। पुरुषों से व्यापार और राजनीति की बातें करते हैं महिलाओं से खाने और युद्ध के समय की मुश्किलों की बातें करते हैं। हमारे मददगार रोजाना अपनी बेहतरीन भावनाओं और प्यार से हमारा दिल जीत रहे हैं।

15. मिस्टर डसेल किस प्रकार के प्राणी थे?
वे अधेड़ उम्र के सनकी, लम्बी और ऊबाऊ इंसान थे। वे बाबा आदम के जमाने के अनुशासन - मास्टर थे। वे बात-बात पर लंबे-लंबे भाषण देने लगते थे। कभी कभी उनके अनुकूल आचरण न हो तो डाँट फटकार शुरु कर देते थे।

16. यहूदियों के प्रति जनभावना कैसी थी?
जर्मन लोग यहूदियों से बहुत घृणा करते थे। वे यहूदियों को तरह-तरह से यातनाएँ देते थे। उनके शासन में यहूदियों का गाड़ी पर आना-जाना भी मना था। परंतु आम लोग यहूदियों के प्रति करुणा रखते थे।

17. लेखिका के पिता किस कारण नर्वस हो गए थे?
डायरी के पन्नों में लेखिका के पिता एक स्थान पर बेचैन हुए नजर आते हैं। एक रात उनके घर के नीचे वाले गोदाम में चोरी और लूटमार की नीयत से कुछ सेंधमार घुस आए। उन्होंने गोदाम के दरवाजे का एक फट्टा गिरा दिया था और लूटपाट में लगे हुए थे। भूमिगत रहने के कारण वे खुलकर सामने भी नहीं आ सकते थे यदि पुलिस आ गई तो फिर उनका हिटलर के यातना-शिविरों से बचना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए वे नर्वस हो गए

18. अज्ञातवास के दौरान ऐन और वान दे परिजन अँधेरा होने पर अपना समय कैसे गुजारते थे?

जाता था। तब वे ऊलजलूल बकने लगते थे। कभी पहेलियाँ बुझाते। कभी व्यायाम करते थे। कभी अँग्रेजी या फ्रेंच भाषा बोलने लगते थे। कभी किताबों की समीक्षा करने लगते थे। ऐन कभी-कभी अँधेरे में दूरबीन लगा कर पड़ोसियों के घर में झाँका करती थी।

19. हजार गिल्डर का नोट अवैध घोषित करने का क्या परिणाम हुआ?
ब्लैक मार्केट करने वालों को बहुत करारा झटका लगा। जो लोग भूमिगत थे या जिनके पास अपने धन का हिसाब किताब देने का अवसर नहीं था, वे अचानक गहरे संकट में फँस गए। हजार गिल्डर के नोट को बदलवाने के लिये ये बताना जरूरी होता था कि वह आया कहाँ से?

20. हिटलर और सैनिकों की बातचीत का मुख्य विषय क्या होता था?
हिटलर और उसके सैनिकों की जो बातचीत रेडियो पर प्रसारित की जाती थी उसका विषय होता था - युद्ध में घायल हुए सैनिकों का हालचाल। हिटलर घायल सैनिकों से उनका हालचाल पूछते थे। सैनिक अपनी वीर गाथा को बड़े गर्व और उत्साह से बताया करते थे।

अतीत में दबे पाँव

1. मुअनजो-दड़ो की सभ्यता का अभी इतना प्रचार क्यों नहीं हुआ?

इस सभ्यता में भव्यता का आडंबर नहीं है। यह सभ्यता अभी पिछली शताब्दी में ही सामने आई है। इसकी लिपि अभी पढ़ी नहीं जा सकी है अतः सभी रहस्य उद्घाटित नहीं हो सके हैं। यही तीन कारण रहे हैं।

2. सिंधु सभ्यता साधन संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। कैसे?

सिंधु-सभ्यता साधन सम्पन्न थी। यहाँ सुनियोजित नगर थे। पानी की अच्छी व्यवस्था थी। सड़कें चौड़ी थीं। वे खेती करते थे। इनको ताँबे का ज्ञान था। वे अपने सामान का निर्यात भी करते थे। काँसे के बर्तन, चाक पर बने विशाल मृद-भांड, उन पर बने चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, ताँबे का दर्पण, कंघी, मनके वाले हार, सोने के गहने, उनकी संपन्नता के सूचक हैं। यातायात के लिए उनके पास बैलगाड़ी थी। उनके अनाज के भंडार भरे रहते थे।

संपन्नता के बाद भी इस सभ्यता में भव्यता के आडंबर का अभाव था। यहाँ न भव्य प्रासाद हैं और न मंदिर, यहाँ राजाओं या मंहतों की समाधियाँ भी नहीं हैं। यहाँ के मूर्ति शिल्प और औजार छोटे हैं। मकान भी छोटे-छोटे हैं और कमरे तो बहुत छोटे हैं। 'नरेश' के सिर पर मुकुट भी बहुत छोटा है। नाव भी आकार में छोटी है। प्रभुत्व या दिखावे के तेवर कहीं दिखाई नहीं देते। अतः यह कहना समीचीन ही है कि सिंधु सभ्यता साधन-सम्पन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था।

3. सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति क्यों कहा जाता है।

नदी, कुएँ, कुंड, स्नानागार और बेजोड़ पानी-निकासी की व्यवस्था के कारण इस सभ्यता को जल-संस्कृति कहते

4. सिंधु-सभ्यता की सबसे इसका सौन्दर्य बोध है जो राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित था। ऐसा क्यों कहा गया है?

सिंधु घाटी के लोगों में कला या सुरुचि बहुत अधिक थी जो उस काल के मनुष्यों की दैनिक प्रयोग की वस्तुओं में स्पष्ट दिखाई देती है। जैसे घरों की वास्तुकला तथा नियोजन, धातु व पत्थर की मूर्तियां, मिट्टी के बर्तन और उन पर बने चित्र, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियां, मुहरें, उन पर उत्कीर्ण आकृतियां, खिलौने, केश विन्यास आभूषण, सुघड़ लिपि इस सभ्यता के सौंदर्यबोध को व्यक्त करती हैं किंतु वृहत्काय राजमहल, मंदिरों और समाधियों के अवशेष नहीं मिलते। भवनों में आकार की विशालता व भव्यता नहीं है कोई ऐसा चित्र या मूर्ति उपलब्ध नहीं हुई है जिसमें प्रभुत्व या दिखावे के तेवर हों। आशय यह है कि राजा या धर्म जगत का ज्यादा प्रभाव नहीं है उनसे संबंधित सामान नहीं है। सामान्य इंसानों के ही सामान मिले हैं।

5. नीचा नगर किसे कहा गया है?

गढ़ 12 फुट की ऊँचाई पर स्थित था। उसके सामने छोटे छोटे टीलों पर शेष नगर बसा हुआ था। नीचे टीलों पर बसा होने के कारण उसे नीचा नगर कहा जाता था।

6. पुरातत्व के किन चिह्नों के आधार पर आप कह सकते हैं कि "सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी।"

मुहनजो-दड़ो के अजायबघर में प्रदर्शित वस्तुओं में कलाकृतियां हैं, औजार हैं किंतु कोई हथियार नहीं है। मुअन जो-दड़ो क्या हड़प्पा से लेकर हरियाणा तक समूची सिंधु सभ्यता में हथियार इस तरह कहीं नहीं मिले हैं जैसे किसी राजतंत्र में होते हैं यदि इस सभ्यता में कोई शक्ति-केन्द्र होता तो उसके चिह्न मिलते। इसके तो नरेश के सिर पर मुकुट भी बहुत छोटा सा है

निकलता है कि इस सभ्यता में सत्ता का कोई केन्द्र नहीं था। अनुशासन स्वयं का था, ताकत के बल पर आधारित नहीं था। इन आधारों पर ही पुरातत्वविद् मानते हैं कि कोई सैन्य सत्ता शायद यहाँ न रही हो। सभी नागरिक अपनी समझ से अनुशासित थे।

7. सभ्यता के तर युग से क्या आशय है।
सभ्यता का तर युग का आशय है - उस सभ्यता में जल के बहुत प्रबंध थे।

8. यह सच है कि यहाँ किसी आँगन की टूटी फूटी सीढ़ियाँ अब आप को कहीं नहीं ले जातीं, वे आकाश की तरफ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन इन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं उस के पार झाँक रहे हैं। इस कथन के पीछे लेखक का क्या आशय है।
मुअन जो दड़ो की सभ्यता पाँच हजार वर्ष पूर्व की है, हमारे पास लिपिबद्ध इतिहास चौथी शताब्दी ई. पू. से ही है। इस दृष्टि से देखें तो सिंधु सभ्यता वर्तमान इतिहास की आयु से दुगनी उम्र की है। मुअन जो-दड़ो के खंडहरों से मिली सीढ़ियों पर पैर रखकर हम किसी छत पर तो नहीं जा सकते किंतु जब इन सीढ़ियों के बचे हुए पायदानों पर पैर रखते हैं तो हमें इस बात का गर्व अनुभव होता है कि जब शेष संसार में सभ्यता का सूर्य उदित भी नहीं हुआ था उस समय हमारे पास सिंधु घाटी की सुसंस्कृत एवं उन्नत सभ्यता थी।

9. मुअन जो-दड़ो की सभ्यता में हथियारों का न मिलना क्या सिद्ध करता है?
मुअनजो-दड़ो की सभ्यता में हथियार नहीं मिलते। न ही प्रभुत्व स्वामित्व या शासकीय तेवर दिखाने वाले चित्र मिलते हैं। इससे अनुमान होता है कि सिंधु घाटी की सभ्यता, समाज- अनुशासित अत्यंत उच्च

था। यहाँ समाज का संगठन बहुत मजबूत था जिसके बल पर समाज अनुशासित होता था।

10. टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती ज़िंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज़ होते हैं - इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

हमारे मन में यह भाव उठता है कि आज से पाँच हजार साल पहले हमारे पूर्वज एक विकसित सभ्यता तथा संस्कृति के आधार पर भारत में निवास करते थे। ये खंडहर उस संस्कृति की रहन-सहन व्यवस्था के साथ ही उन पूर्वजों के जीवन के ऐसे क्षेत्रों से भी परिचय कराते हैं जिनसे अभी तक हम अपरिचित थे। मन में ये भाव रहता है कि कल तक लोग यहाँ रहते थे। हम सभी सभ्यता की परंपरा के हैं। कभी ये हमारे ही घर थे किंतु विडंबना है कि आज हम दर्शक मात्र रह गए हैं। इन खंडहरों में खड़े होकर हम कल्पना करते हैं कि हजारों साल पहले यहाँ जीवन की चहल-पहल थी।

11. मुअनजो-दड़ो में यद्यपि किसी प्रशासन के होने के चिह्न नहीं हैं, फिर भी उसमे कोई शासन अवश्य था क्यों?

मुअनजो-दड़ो की नगर योजना, एक जैसे मकान और व्यवस्थित जल निकासी प्रथा को देखकर लगता है कि मुअनजो-दड़ो में किसी न किसी प्रकार का अनुशासन अवश्य था। सब नगर वासी किसी नियम और शासन को मानते होंगे। सभी घर तीस-गुणा तीस फुट के या इनसे दुगने-तिगुने थे। सड़के भी नियोजित थी। ये बातें स्पष्ट करती हैं कि मुअनजो-दड़ो में कोई न कोई प्रभावी शासन व्यवस्था अवश्य थी।

12. नदी, कुएँ स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लेखक पाठकों से प्रश्न पूछता है कि

कह सकते हैं।

1. संसार के महत्वपूर्ण नगर जल-स्रोतों पर स्थित है। मोहन जोदड़ो के निकट सिंधु नदी बहती थी।
2. प्रत्येक गली पक्की ईंटों से बनी है और साथ ही ढंकी हुई भी है।
3. नगर में 700 कुएँ थे।
4. सब मकानों में अलग स्नानघर थे।

इन विशेषताओं को देखकर कह सकते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता जल संस्कृति का उदाहरण है।

13. सिंधु घाटी सभ्यता में कोठारों का क्या प्रयोग होता था?

सिंधु घाटी की सभ्यता में ऐसे कोठार पाए गए हैं जिसे शायद कर के रूप में प्राप्त अनाज जमा किया जाता था। इनमें नौ-नौ कोठियों की तीन कतारें हैं। उत्तर दिशा में एक गली है, जहाँ से बैलगाड़ियाँ आती जाती थीं। इन्हीं के माध्यम से अनाज की ढुलाई की जाती थी।

14. मुअनजो-दड़ो की नगर योजना पर टिप्पणी कीजिए।

मुअनजो-दड़ो के बारे में धारणा है कि वह अपने दौर में घाटी की सभ्यता का केन्द्र रहा होगा। यानी एक तरह की राजधानी। यह शहर दो सौ हेक्टेयर क्षेत्र में फैला था। आबादी कोई पचासी हजार थी। जाहिर है, पाँच हजार साल पहले यह आज के 'महानगर' की परिभाषा को भी लाँघता होगा।

सिंधु घाटी सभ्यता मैदान की संस्कृति थी, पर पूरा मुअनजो-दड़ो ऊँचे मोटे टीलों पर आबाद था। ये टीले प्राकृतिक नहीं थे। कच्ची और पक्की दोनों तरह की ईंटों से धरती की सतह को ऊँचा उठाया गया था। ताकि सिंधु का पानी बाहर पसर जाए तो उससे बचा जा सके।

इमारतें भले खंडहरों में बदल चुकी हों, मगर शहर की सड़कों और गलियों के विस्तार को स्पष्ट करने के लिये ये खंडहर काफी हैं। सारी सड़कें सीधी हैं या फिर आड़ी

वाले चबूतरे के पीछे गढ़ और ठीक सामने उच्च वर्ग की बस्ती है दक्षिण की ओर खंडहर है जो कामगारों की बस्ती है। सामूहिक स्नान के लिए 40×25×7 फुट गहरा कुंड है। इसमें उत्तर दक्षिण से सीढ़ियां उतरती हैं। इसके तीन तरफ साधुओं के कक्ष हैं। कुंड से पानी निकालने के लिए नालियां हैं।

15. बौद्ध स्तूप का वर्णन कीजिए

मुअनजो-दड़ो के खंडहरों के सबसे ऊँचे चबूतरे पर एक बौद्ध स्तूप है। इसका चबूतरा 25 फीट ऊंचा है। स्तूप का निर्माण काल 2600 वर्ष पूर्व का है। चबूतरे पर भिक्षुओं के कमरे हैं। यह बौद्ध स्तूप भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप है। स्तूप वाले भाग को गढ़ कहते हैं। गढ़ के सामने उच्चवर्ग की बस्ती है।

16. महाकुंड का वर्णन कीजिए।

मुअनजो-दड़ो में एक तालाब मिला है जिसे महाकुंड नाम दिया गया है। इस महाकुंड की लंबाई चालीस फुट चौड़ाई पच्चीस फुट तथा गहराई सात फुट है। कुंड में उत्तर और दक्षिण से सीढ़ियां उतरती हैं। उत्तर दिशा में दो पाँत में आठ स्नानघर हैं। इस महाकुंड के बारे में लेखक लिखता है वह आनुष्ठानिक महाकुंड भी जो सिंधु घाटी सभ्यता के अद्वितीय वास्तुकौशल को स्थापित करने के लिए अकेला ही काफी माना जाता है।

कुंड के तीन तरफ साधुओं के कक्ष बने हुए हैं। कुंड वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। इस कुंड में खासबात पक्की ईंटों का जमाव है। कुंड का पानी रिस न सके और बाहर का 'अशुद्ध' पानी कुंड में न आए इसके लिए कुंड के तल में और दीवारों पर ईंटों के बीच चूने और चिरोड़ी के गारे का इस्तेमाल हुआ है।

17. सिंधु घाटी की सभ्यता मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी स्पष्ट कीजिए

वे अन्न उपजाते नहीं थे, उसका आयात करते थे। किंतु नई खोज ने इस ख्याल को निर्मूल साबित किया है। अब कुछ विद्वान मानते हैं कि वह मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता ही थी। लोहा शुरू में नहीं था। पर पत्थर और तांबे की बहुतायत थी। पत्थर सिंध में ही था, तांबे की खानें राजस्थान में थीं। इनके उपकरण खेती बाड़ी में प्रयोग किए जाते थे। जबकि मिस्र और सुमेर में चकमक और लकड़ी के उपकरण इस्तेमाल होते थे। यहाँ के लोग रबी फसल लेते थे। कपास, गेहूं, जौ, सरसों और चने की उपज के पुख्ता सबूत खुदाई में मिले हैं।

18. मुअनजो-दड़ो के अजायबघर में लेखक ने क्या-क्या देखा?
मुअनजो-दड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीजों की संख्या पचास हजार से ज्यादा है। मगर जो मुट्ठी-भर चीजें अजायबघर में प्रदर्शित की गई हैं, वे सिंधु सभ्यता की झलक दिखाने को काफी हैं। काला पड़ गया गेहूं, तांबे और कांसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद भांड, उन पर काले-भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियां, दीये, माप-तौल पत्थर, तांबे का आइना, मिट्टी की बैलगाड़ी और दूसरे खिलौने, दो पाटन वाली चक्की, कंघी, मिट्टी के कंगन, रंग-बिरंगे पत्थरों के मनकों वाले हार और पत्थर के औजार

19. सिंधु घाटी सभ्यता की कला का वर्णन कीजिए।
सिंधु-घाटी के लोगों में कला या सुरुचि का महत्व ज्यादा था। वास्तुकला या नगर नियोजन ही नहीं, धातु और पत्थर की मूर्तियाँ, मृद्-भांड, उन पर चित्रित मनुष्य, वनस्पति और पशु-पक्षियों की छवियाँ, सुनिर्मित मुहरें, उन पर बारीकी से उत्कीर्ण आकृतियाँ, खिलौने, केश-विन्यास, आभूषण और सबसे ऊपर सुघड़ अक्षरों का लिपिरूप सिंधु सभ्यता को तकनीक-सिद्ध से ज्यादा कला-सिद्ध जाहिर करता है।

मुअनजो-दड़ो का आदिम शहर आज धुरसा खंडहर बन चुका है। उस शहर के मकानों की छतें उड़ चुकी हैं। किंतु अंदर के कमरे, रसोई, अधूरी सीढ़ियां, गलियां सड़कें ज्यों की त्यों हैं। वहां जाकर ऐसा लगता है मानो अब भी इन पर बैलगाड़ी की रुन-झुन गूंजती होगी।